



“शिक्षक प्रशिक्षुओं की अधिगम-चिन्तन शैली का उनके आत्मबोध पर प्रभाव।”

कुँवर सिंह¹, डा. मालविका काण्डपाल²

1-अनुसंधान कर्त्ता, स्कूल आफ एडुकेशन श्री गुरु राम राय विश्वविद्यालय देहरादून उत्तराखण्ड।

2- प्राध्यापिका (डीन) स्कूल आफ एडुकेशन, श्री गुरु राम राय विश्वविद्यालय देहरादून उत्तराखण्ड।

सार

प्रस्तुत शोध-पत्र के अन्तरगत शिक्षक प्रशिक्षुओं की अधिगम-चिन्तन शैली और उनके आत्मबोध के मध्य संबंध का अध्ययन किया गया है। प्रत्येक विद्यार्थी की अधिगम-चिन्तन शैली भिन्न होती है जो उनकी बौद्धिक क्षमता, व्यक्तित्व और आत्म-जागरूकता को प्रभावित करती है। आत्मबोध अर्थात् स्वयं की क्षमताओं, कमजोरियों, रुचियों एवं संभावनाओं को पहचानना और आत्ममूल्यांकन की क्षमता विकसित करना। लचीली, रचनात्मक एवं विश्लेषणात्मक अधिगम-चिन्तन शैली रखने वाले शिक्षक-प्रशिक्षुओं का आत्मबोध स्तर अपेक्षाकृत उच्च होता है जबकि सीमित एवं रूढ़िवादी अधिगम-चिन्तन शैली आत्मबोध के विकास में बाधक बनती है। अतः यह शोध अध्ययन शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों के लिए उपयोगी सिद्ध हो सकता है क्योंकि इसके आधार पर प्रशिक्षण पद्धतियों में सुधार कर आत्म-जागरूक, आत्मविश्वासी तथा रचनात्मक शिक्षक तैयार किए जा सकते हैं।

कुंजी शब्द- अधिगम-चिन्तन शैली, आत्मबोध, शिक्षक प्रशिक्षु,

प्रस्तावना

शिक्षा ज्ञान प्रदान करने के साथ-साथ विद्यार्थियों के सम्पूर्ण व्यक्तित्व-विकास, सामाजिक उत्तरदायित्व तथा मानवीय मूल्यों की स्थापना का आधार है। शिक्षा के क्षेत्र में यह सर्वविदित है कि प्रत्येक छात्र की अधिगम-चिन्तन शैली का ढंग अलग होता है। कोई विद्यार्थी दृश्य माध्यमों से अधिक सीखता है तो कोई श्रव्य/क्रियात्मक माध्यमों से। इसी प्रकार कुछ विद्यार्थी विश्लेषणात्मक सोच में दक्ष होते हैं तो कुछ समग्र दृष्टिकोण से सोचते हैं। अधिगम-चिन्तन शैली विद्यार्थी की बौद्धिक क्षमताओं, अनुभवों, पर्यावरणीय प्रभावों तथा व्यक्तित्व-लक्षणों से प्रभावित होती है। शिक्षक प्रशिक्षुओं के लिए अधिगम-चिन्तन शैली महत्वपूर्ण है क्योंकि यह उन्हें भावी शिक्षक के रूप में अपनी शिक्षण-प्रक्रिया को रचनात्मक, प्रभावी और नवोन्मेषी बनाने में सहायक बनाती है। आत्मबोध अर्थात् स्वयं को पहचानना, अपनी शक्तियों और कमजोरियों का समझना तथा आत्ममूल्यांकन की क्षमता विकसित करना। शिक्षा के क्षेत्र में आत्मबोध का विशेष महत्व है क्योंकि यह शिक्षक प्रशिक्षुओं को आत्मविश्वास, आत्म-निर्णय क्षमता और अनुकूलनशीलता प्रदान करता है। अतः अधिगम-चिन्तन शैली जहाँ उन्हें सीखने और सिखाने की दिशा देती है, वहीं आत्मबोध उन्हें अपने व्यक्तित्व को समझने और परिपक्व बनाने का आधार प्रदान करता है।

अधिगम-चिन्तन शैली

अधिगम शैली

कीफे के अनुसार- “अधिगम शैली संज्ञानात्मक प्रभावशाली और शारीरिक कारकों के सम्मिश्रण के रूप में, जो एक शिक्षार्थी की धारणा के अपेक्षाकृत स्थिर संकेतक के रूप में कार्य करता है, सीखने के महौल के प्रति प्रतिक्रिया के साथ बातचीत करता है।”

चिन्तन शैली

स्टर्नबर्ग, 1997 के अनुसार- चिन्तन शैली को एक निश्चित चिन्तन प्रक्रिया के लिए किसी व्यक्ति की प्राथमिकता के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। यह एक विशिष्ट तर्क और समस्या समाधान रणनीति है जो इसे स्पष्ट करने में मदद करती है कि लोग समस्या के प्रति अलग-अलग तरीकों से

प्रतिक्रिया से प्रतिक्रिया क्यों करते हैं। जानकारी संसाधित करने का एक पसंदीदा तरीका है और इसमें संज्ञानात्मक के साथ-साथ भावनात्मक आयाम भी है। सोचने की शैलियाँ संज्ञानात्मक होती हैं क्योंकि वे अनुभव के दौरान प्राप्त तर्क और समस्या समाधान रणनीतियाँ की अभिव्यक्तियाँ हैं। हालाँकि शैलियाँ भी प्रभावशाली होती हैं क्योंकि वे दृष्टिकोण और रूचि से प्रभावित होती हैं और एक व्यक्ति किसी कार्य के बारे में कैसा महसूस करता है।

आत्मबोध

रोसेनबर्ग (1979) के अनुसार- “किसी व्यक्ति के विचारों और भावनाओं की समग्रता जिसमें स्वयं को एक वस्तु के रूप में सन्दर्भित किया जाता है।” शिक्षक प्रशिक्षु

अंग्रेजी शब्दकोश के अनुसार- “एक शिक्षक प्रशिक्षु एक कालेज, विश्वविद्यालय या स्नातक छात्र है जो शिक्षा में डिग्री के अर्हता प्राप्त करने के लिए एक प्रमाणित शिक्षक की देखरेख में पढ़ा रहा है।

आवश्यकता एवं महत्त्व

शिक्षक प्रशिक्षुओं को केवल विषयगत ज्ञान तक सीमित न रखकर उनकी सोचने-समझने की शैली और आत्मबोध के स्तर पर भी ध्यान दिया जाए। यदि शिक्षक प्रशिक्षु अपनी अधिगम-चिन्तन शैली को पहचानने और समझने में सक्षम होते हैं तो वे न केवल अधिगम प्रभावी ढंग से सीख सकते हैं बल्कि भावी शिक्षण कार्य में विद्यार्थियों की विविध अधिगम आवश्यकताओं को भी समझ पाते हैं। आत्मबोध अर्थात् स्वयं की क्षमताओं, कमजोरियों, रूचियों और संभावनाओं को सही प्रकार से पहचानना। आत्मबोध सम्पन्न शिक्षक प्रशिक्षु आत्मविश्वासी, आत्मनिर्णय क्षमता से युक्त और शिक्षण के प्रति अधिक उत्तरदायी बनते हैं। यह शोध शिक्षक प्रशिक्षुओं को आत्म-जागरूकता प्रदान करेगा और उन्हें अपनी क्षमताओं का रचनात्मक उपयोगी करने के लिए प्रेरित करेगा। अतः यह शोध शिक्षा की गुणवत्ता को बढ़ाने, भावी पीढ़ी को सशक्त बनाने और समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने की दिशा में अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

शोध उद्देश्य

1. शिक्षक प्रशिक्षुओं के अधिगम-चिन्तन शैली का उनके आत्मबोध पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।
2. छात्र शिक्षक प्रशिक्षुओं के अधिगम-चिन्तन शैली का उनके आत्मबोध पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।
3. छात्रा शिक्षक प्रशिक्षुओं के अधिगम-चिन्तन शैली का उनके आत्मबोध पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।

शोध परिकल्पना

1. शिक्षक प्रशिक्षुओं के अधिगम-चिन्तन शैली तथा उनके आत्मबोध के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. छात्र शिक्षक प्रशिक्षुओं के अधिगम-चिन्तन शैली तथा उनके आत्मबोध के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
3. छात्रा शिक्षक प्रशिक्षुओं के अधिगम-चिन्तन शैली तथा उनके आत्मबोध के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

अध्ययन का परिसीमांकन

1. प्रस्तुत शोध में शोधकर्ता द्वारा उत्तराखण्ड राज्य में स्थित देहरादून जिले के सभी शिक्षण प्रशिक्षण संस्थानों में प्रशिक्षण ले रहे समस्त नामांकित शिक्षक प्रशिक्षुओं का परिसीमांकन जनसंख्या के रूप में किया जायेगा।
2. प्रस्तुत शोध में शोधकर्ता द्वारा सम्भावित न्यायदर्श द्वारा उत्तराखण्ड राज्य में स्थित देहरादून जिले के 07 शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों का चयन किया गया। चयनित प्रशिक्षण संस्थानों में नामांकित कुल शिक्षक प्रशिक्षुओं कुल संख्या- 300 (51 छात्र 249 छात्रा) को न्यायदर्श के रूप में लिया गया है।

अनुसंधान क्रियाविधि में प्रयुक्त अनुसंधान रूपरेखा तथा अनुसंधान विधि

प्रस्तुत अनुसंधान के अन्तर्गत अनुसंधानकर्ता ने अप्रयोगात्मक अनुसंधान रूपरेखा का प्रयोग किया है, जिसके अन्तर्गत अन्तर्गत अनुसंधानकर्ता ने वर्णनात्मक अनुसंधान विधि का प्रयोग किया है।

अध्ययन में प्रयुक्त चर

प्रस्तुत शोध पत्र के अन्तर्गत अनुसंधानकर्ता ने दो चरों को दर्शाया है जिनके नाम इस प्रकार से हैं- अधिगम-चिन्तन शैली, आत्मबोध। अधिगम-चिन्तन शैली स्वतन्त्र चर तथा आत्मबोध आश्रित चर के रूप में दर्शाया गया। शोधकर्ता केवल इन दो चरों के बीच सम्बन्ध देखना चाहता है।

अनुसंधान में प्रयुक्त उपकरण

1. अधिगम-चिन्तन शैली मानकीकृत परीक्षण (डी0 बैकटरन द्वारा निर्मित)।

2. आत्मबोध परीक्षण- मानकीकृत परीक्षण (अख्तर बानो और सुष्मा टलीसारा द्वारा विकसित, हिन्दी/अंग्रेजी संस्करण है)। प्रस्तुत अनुसंधान में प्रयुक्त उपकरणों का विवरण-

अध्ययन में प्रयुक्त सांख्यिकीय

प्रस्तुत शोध अध्ययन के अन्तर्गत शोधकर्ता ने समूहों के मध्य तुलना हेतु सामान्तर माध्य, मानक विचलन तथा टी-टेस्ट का प्रयोग किया है।

सांख्यिकीय विश्लेषण और परिणाम

परीक्षण- इस अध्ययन के अन्तर्गत परिकल्पना का परीक्षण टी-टेस्ट का प्रयोग करके किया गया है। विभिन्न परिणाम निम्नलिखित है-

शिक्षक प्रशिक्षुओं के अधिगम-चिन्तन शैली तथा उनके आत्मबोध के के अंकों माध्य के मध्य अन्तर

शिक्षक प्रशिक्षु						
चर	संख्या	माध्य	मानक विचलन	स्वतन्त्रता का स्तर	टी-परीक्षण	सार्थक स्तर 0.05
अधिगम-चिन्तन शैली	300	41-59	7-43	299	42-52	सार्थक
आत्मबोध	300	75-03	17-01	299		

उपर्युक्त संख्याखिकीय गणना के आधार पर यह निम्नलिखित सांख्यिकीय मान प्राप्त हुये है-

1. शिक्षक प्रशिक्षुओं अधिगम-चिन्तन शैली के माध्य का मान-41.59, मानक विचलन का मान-7.43, स्वतन्त्रता का स्तर-299, टी-परीक्षण का मान-42.52 तथा सार्थकता का स्तर सार्थक प्राप्त हुआ।
2. इसी प्रकार शिक्षक प्रशिक्षुओं आत्मबोध के माध्य का मान-75.03, मानक विचलन का मान-17.01, स्वतन्त्रता का स्तर-299, टी-परीक्षण का मान-42.52 तथा सार्थकता का स्तर सार्थक प्राप्त हुआ।
3. 0.05 सार्थकता के स्तर की 1.96 की जटिल मान पर टी का मान-42.52 प्राप्त हुआ जो कि 1.96 के मान से अधिक है जिसके आधार पर 0.05 सार्थक स्तर पर टी का मान सार्थक प्राप्त हुआ है।

परिणाम- प्रस्तुत शोध में माध्य, मानक विचलन तथा टी-परीक्षण का उपयोग किया गया। प्रथम परिकल्पना “शिक्षक प्रशिक्षुओं के अधिगम-चिन्तन शैली तथा उनके आत्मबोध के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं है” अस्वीकृत की जाती है।

छात्र शिक्षक प्रशिक्षुओं के अधिगम-चिन्तन शैली तथा उनके आत्मबोध के अंकों के माध्य के मध्य अन्तर-

छात्र शिक्षक प्रशिक्षु						
चर	संख्या	माध्य	मानक विचलन	स्वतन्त्रता का स्तर	टी-परीक्षण	सार्थक स्तर 0.05

अधिगम-चिन्तन शैली	51	40-45	9-83	50		
आत्मबोध	51	74-50	17-97	50	46-63	सार्थक

उपर्युक्त संख्याखिकीय गणना के आधार पर यह निम्नलिखित सांख्यिकीय मान प्राप्त हुये है-

- छात्र शिक्षक प्रशिक्षुओं के अधिगम-चिन्तन शैली के माध्य का मान-40.45, मानक विचलन का मान-9.83, स्वतन्त्रता का स्तर-50, टी-परीक्षण का मान-46.63 तथा सार्थकता का स्तर सार्थक प्राप्त हुआ है।
- इसी प्रकार छात्र शिक्षक प्रशिक्षुओं के आत्मबोध के माध्य का मान-74.50, मानक विचलन का मान-17.97, स्वतन्त्रता का स्तर-50, टी-परीक्षण का मान-46.63 तथा सार्थकता का स्तर सार्थक प्राप्त हुआ है।
- 0.05 सार्थकता के स्तर की 1.96 की जटिल मान पर टी का मान-46.63 प्राप्त हुआ जो कि 1.96 के मान से अधिक है जिसके आधार पर 0.05 सार्थक स्तर पर टी का मान सार्थक प्राप्त हुआ है।

परिणाम- प्रस्तुत शोध में माध्य, मानक विचलन तथा टी-परीक्षण का उपयोग किया गया। द्वितीय परिकल्पना “छात्र शिक्षक प्रशिक्षुओं के अधिगम-चिन्तन शैली तथा उनके आत्मबोध के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं है” अस्वीकृत की जाती है।

छात्र शिक्षक प्रशिक्षुओं के अधिगम-चिन्तन शैली तथा उनके आत्मबोध के के अंकों माध्य के मध्य अन्तर-

छात्र शिक्षक प्रशिक्षु						
चर	संख्या	माध्य	मानक विचलन	स्वतन्त्रता का स्तर	टी-परीक्षण	सार्थक स्तर 0.05
अधिगम-चिन्तन शैली	249	41-82	6-81	248	42-91	सार्थक
आत्मबोध	249	75-14	16-81	248		

उपर्युक्त संख्याखिकीय गणना के आधार पर यह निम्नलिखित सांख्यिकीय मान प्राप्त हुये है-

- छात्र शिक्षक प्रशिक्षुओं के अधिगम-चिन्तन शैली के माध्य का मान-41.82, मानक विचलन का मान-6.81, स्वतन्त्रता का स्तर-248, टी-परीक्षण का मान-42.91 तथा सार्थकता का स्तर सार्थक प्राप्त हुआ है। इसी प्रकार छात्र शिक्षक प्रशिक्षुओं के आत्मबोध के माध्य का मान-75.14, मानक विचलन का मान-16.81, स्वतन्त्रता का स्तर-248, टी-परीक्षण का मान-42.91 तथा सार्थकता का स्तर सार्थक प्राप्त हुआ है। 0.05 सार्थकता के स्तर की 1.96 की जटिल मान पर टी का मान-42.91 प्राप्त हुआ जो कि 1.96 के मान से अधिक है जिसके आधार पर 0.05 सार्थक स्तर पर टी का मान सार्थक प्राप्त हुआ है।

परिणाम- प्रस्तुत शोध में माध्य, मानक विचलन तथा टी-परीक्षण का उपयोग किया गया। तृतीय परिकल्पना “छात्र शिक्षक प्रशिक्षुओं के अधिगम-चिन्तन शैली तथा उनके आत्मबोध के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं है” अस्वीकृत की जाती है।

निष्कर्ष

अध्ययन के प्रमुख निष्कर्ष- प्राप्त सांख्यिकीय गणना के आधार पर यह पाया गया कि शिक्षक प्रशिक्षुओं की अधिगम-चिन्तन शैली का उनके आत्मबोध पर सकारात्मक रूप से प्रभाव डालती है अर्थात् यदि शिक्षक प्रशिक्षुओं की अधिगम-चिन्तन शैली में वृद्धि होगी तो यह वृद्धि उनके आत्मबोध में भी वृद्धि करेगी जो शिक्षक प्रशिक्षुओं के शिक्षण को अधिक प्रभावी बनाने में सहायक होगा। छात्र शिक्षक प्रशिक्षुओं की अधिगम-चिन्तन शैली का उनके आत्मबोध पर सकारात्मक रूप से प्रभाव डालती है अर्थात् यदि छात्र शिक्षक प्रशिक्षुओं की अधिगम-चिन्तन शैली में वृद्धि होगी तो यह वृद्धि उनके आत्मबोध में भी वृद्धि करेगी जो छात्र शिक्षक प्रशिक्षुओं के शिक्षण को अधिक प्रभावी बनाने में सहायक होगा। छात्र शिक्षक प्रशिक्षुओं की अधिगम-चिन्तन शैली का उनके आत्मबोध पर सकारात्मक रूप से प्रभाव डालती है। इस प्रकार यदि छात्र शिक्षक प्रशिक्षुओं की अधिगम-चिन्तन शैली में वृद्धि होगी तो यह वृद्धि उनके आत्मबोध में भी वृद्धि करेगी जो छात्र शिक्षक प्रशिक्षुओं के शिक्षण को अधिक प्रभावी बनाने में सहायक होगा।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. भटनागर डॉ. ए.बी, भटनागर डॉ. मीनाक्षी, भटनागर डॉ. अनुराग (2011), डेवलपमेंट लर्नर एण्ड टीचिंग लर्निंग प्रोसेस, मेरठ: आर. लाल बुक डिपो।
2. राय पारसनाथ, राय सी.पी. (2011), एन इंट्रोडक्शन टू रिसर्च, आगरा: लक्ष्मी नारायण अग्रवाल।
3. सिंह अरूण कुमार (2021), रिसर्च मेथड्स इन साइकोलाजी, सोसियोलाजी एण्ड एडुकेशन, दिल्ली: मोतीलाल बनारसी दास, पब्लिशिंग हाउस।
4. शर्मा आर. ए. (2006), शिक्षा अनुसंधान, मेरठ: आर. लाल बुक डिपो।
5. मंगल एस. के. (2010), शिक्षा मनोविज्ञान, नई दिल्ली: पीएचआई लर्निंग प्राईवेट लिमिटेड।
6. एफ कैनो-गार्सिया, ईएच हारूजेस (2000), लर्निंग एण्ड थिंकिंग स्टाइल्स: एन एनालिसिस आफ देयर इंटररेलेशनशिप एंड इम्प्लुएंस ऑन एकेडमिक अचीवमेंट। एचटीटीपीएस://स्कॉलर.गूगल.कॉम।
7. ए.बैरी, एस. हाजी, एम.शहाबी वी.सिपाही, एम.घासेमी, ए.नोरौजी जी.रमेजानी (2024), असेसमेंट आफ द रिलेशनशिप बिटवीन थिंकिंग स्टाइल्स एंड लर्निंग स्टाइल्स विथ एकेडमिक परफारमेंस इन मेडिकल एंड नर्सिंग स्टूडेंट्स ऑफ केरमानशाह यूनिवर्सिटी आफ मेडिकल साइंस। एचटीटीपीएस://स्कॉलर.गूगल.कॉम।
8. एम. गुप्ता (2017), लर्निंग एंड थिंकिंग स्टाइल्स एज अ मेजर डेटर्मिनेन्ट ऑफ एकेडमिक अचीवमेंट अमंग स्कूल स्टूडेंट्स: एन एनालिटिकल स्टडी। एचटीटीपीएस://स्कॉलर.गूगल.कॉम।
9. जे. डोन्टोह, ए. बोर्डोह, एस. कोफी डी.एस. क्रांसाह (2019), द इम्पैक्ट ऑफ सोशल सेल्फ-कांसेप्ट ओन द एकेडमिक परफारमेंस आफ टीचर-ट्रेनीज इन घाना। एचटीटीपीएस://स्कॉलर.गूगल.कॉम।